'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १३० | वाराणसी, गुरुवार, १२ नवम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

स्वागत-प्रवचन

मीरासाहिबाँ (जम्मू) ८-६-'५९

सर्वोदय में राजनीति और प्रेम को इकट्ठा करने की योजना है

हमारा काम है, दिल के साथ दिल जोड़ना। इसलिए हम भूदान, संपत्तिदान, ग्रामदान माँगते हैं। जिनके दिल में भगवान जाग उठते हैं, वे भूदान, संपत्तिदान देते हैं, ग्रामदान कबूल करते हैं और इसके अलावा लोगों की सेवा के लिए, शांति के काम के लिए अपने नाम भी देते हैं। वे कहते हैं कि हम शांति का काम करेंगे। हमारे लिए घर की तरफ ज्यादा ध्यान देने की जरूरत नहीं है, इसलिए हम तनख्वाह लिये बिना ही समाज-सेवा करते रहेंगे। शान्ति के काम में जरूरत पड़े तो बलिदान भी देंगे। हमें भूदान, संपत्तिदान, ग्रामदान, शांति-सेना आदि के पीछे लोक-सम्मति का बल चाहिए। उस वास्ते हम सर्वोदय-पात्र की बात करते हैं। आठ साल से दिल जोड़ने का कार्यक्रम चल रहा है। यह संदेश लोगों के पास पहुँचाने का काम उनका है, जो इसे समझे हैं। जैसे ये कृष्ण-जी हैं। ये इस विचार को समझी हैं। अब यह उनका काम है।

दोनों हाथों में लड्डू हो

मेरे मन में जो सहज चिन्तन चल रहा था, वह मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ। जैसे-जैसे हम जम्मू शहर के नजदीक आ रहे हैं, वैसे-वैसे हमें दीख रहा है कि लोगों में सियासत के बारे में खूब जागृति है। बेदार हैं लोग! यह अच्छा तरीका है। लेकिन ये जागृत लोग एक-दूसरे को मदद करने की, गाँव एक बनाने की, मिल-जुलकर काम करने की हमारी बात सुन तो लेते हैं, पर इनके दिमाग में पूरी तरह से बैठती नहीं है। फिर जम्मू से दूर जो देहात के लोग हैं, वे सियासत के बारे में जानते भी नहीं हैं। लेकिन उन लोगों को ज्यादा दिलचस्पी मिल-जुलकर काम करने में है। उधर कठुवा, ऊधमपुर जिले में सैकड़ों लोगों ने दान-पत्र दिये। यह जम्मूवालों के भाग में नहीं है! जम्मू में सियासी बेदारी ज्यादा है। इसलिए यहाँके लोग मिल-जुलकर काम करने की बात सुनते हैं, उन्हें जँचती भी है और उधर दिल खिंचता भी है, लेकिन दिलचस्पी नहीं है। प्रेम की बात में दिलचस्पी नहीं है। जहाँ प्रेम की बात में दिलचस्पी नहीं है, वहाँ सियासी बेदारी है और जहाँ प्रेम की बात में दिलचस्पी है, वहाँ सियासी बातों में जागृति नहीं है। सियासी जागृति—यह एक अच्छा गुण है और प्रेम की बात में दिलचस्पी—यह भी अच्छा गुण है। इधर एक अच्छा गुण है और उधर एक अच्छा गुण है। हम चाहते हैं कि दोनों अच्छी बातें इकट्ठा हों। दोनों हाथों में लड्डू हो।

सच्ची राजनीति

देश में कहाँ क्या चल रहा है, कौन राज कर रहा है, यह सारी जानकारी भी हो और प्रेम की बातें भी अच्छी लगें, यह कैसे बनेगा? इसका जवाब राजनीति में नहीं, सर्वोदय की सियासत में है। एक मरकज में सत्ता है, उसे बाँटना होगा। गाँव-गाँव में सत्ता लानी होगी, यह सर्वोदय की सियासत है। याने सियासत का ज्ञान प्राप्त करके प्रेम भी करना होगा। सच्ची राजनीति यही है। इसे हम लोकनीति कहते हैं। प्रेम की बात और राजनीति का ज्ञान, दोनों उसमें आते हैं। दोनों बहुत जरूरी हैं।

आज रास्ते में सियासी पार्टियों की चर्चा चल रही थी। कुछ लोग एक सियासी पार्टी की निन्दा कर रहे थे। हम कहते हैं कि इन सभी सियासी पार्टियों को खत्म करने का जमाना आया है। पार्टी याने टुकड़ा, अवयव, जुज़। पार्टी की, टुकड़े की जय हम नहीं कहते, हम सबकी जय कहते हैं। समुद्र की जय कहते हैं। जिसने समुंदर का नाम लिया, उसने सब नदियों का नाम लिया। ये लोग जानते नहीं कि ये पार्टियाँ रहनेवाली नहीं हैं। सर्वोदय में पार्टी की बात नहीं है, लेकिन ये सब पार्टियाँ सर्वोदय में महव होनेवाली हैं, खत्म होनेवाली हैं, डूब जानेवाली हैं। ज्ञान और प्रेम इकट्ठा होना चाहिए।

यह ऐसा विषय है, जिस पर जम्मू, कश्मीर और लद्दाख को सोचना चाहिए। इस स्टेट को लोग जे० एन्ड के० कहते हैं। लेकिन यह जे० के० एल० स्टेट है। तीनों को इस पर सोचना चाहिए। अलावा सारे भारत के, सारी दुनिया के लिए यह सोचने की बात है।

इधर गाँव-गाँव में लोग प्रेम का काम करते रहेंगे और उधर दुनिया में चलनेवाली सियासी बातें भी जानेंगे। अब कहीं सैलाब आया या कहीं हमला हुआ और उसकी जानकारी गाँववाले नहीं रखेंगे और शहरवाले लोग भी प्रेम की बातें नहीं जानेंगे तो उनका काम नहीं बनेगा। उनको प्रेम की बात जाननी होगी और इनको सियासी बात। इसीलिए सर्वोदय में राजनीति का ज्ञान और प्रेम से सबको इकट्ठा करने की बात है।

• • •

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन

पूंछ (जम्मू-कश्मीर) २९-६-'५९

सर्वोदय की मूलभूत दृष्टि

हम आठ साल से पैदल घूम रहे हैं और लोगों के मसले लोगों की ही ताकत से कैसे हल हों यह समझा रहे हैं। हमें इसकी राह मिली है। हमारा काम इस दुनिया में हमदर्दी, प्रेम और रूहानी ताकत बढ़ाने का है। पुराने जमाने में भी इस तरह लोगों को प्यार सिखाने का काम होता था। जैसे आज मैं घूम रहा हूँ, वैसे पुराने जमाने में भी लोग घूमते थे और लोगों को प्यार, रूहानियत की बातें समझाते थे। लेकिन यह काम जो हमने उठाया है, इसमें और उनके काम में फर्क है। एक तो आज की हालत और पहले की हालत में बहुत फर्क है। पहले अवलिया घूमते थे। एक-एक मनुष्य के दिल में पैठते थे। सबके साथ बातें करते थे। उनके दुःख सुनते थे। हरएक का अपना दुःख होता है। वह दुःख जान लेना, समझ लेना और जो इलाज, इमदाद बता सकते हैं, वह एक-एक मनुष्य को अलग-अलग बताना, यही काम पुराने जमाने में पुराने सन्तों ने किया। हरएक को वे समझाते थे। उनमें आलस नहीं होता था। वे एक-एक शख्स के दिल में पैठकर इन्किलाब करने का, दिल में फर्क लाने का काम करते थे। उनको यह भरोसा था कि एक-एक मनुष्य के दिल में फर्क होने से काम होगा।

अलग-अलग लोगों से मिलें, उनके मसले सुनें और हल बतायें—यह हम भी कहते हैं। लेकिन पुराने लोगों का ज्यादा जोर एक-एक इन्सान के पीछे लगता था। लेकिन हम जाती तौर पर कुछ नहीं सुझाते। कोई कहता है : 'हमारी भैंस मर गयी', कोई कहता है : 'हमारी पत्नी मर गयी' और कोई कहता है : 'हमारी जमीन छिन गयी है' तो इस तरह एक-एक का दुःख सुनते हैं, लेकिन एक कान से सुनकर दूसरे कान से बाहर भेज देते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि यह भगवान की लीला है। एक-एक का मसला हल करना, दुःख दूर करना हमारा काम नहीं है। उसका कोई अन्त नहीं आयेगा।

हम लोगों के सभी प्रकार के दुःखों को मिटाना चाहते हैं। इसीलिए सारे समाज को बदलने की कोशिश करते हैं। इन्किलाब लाने की कोशिश करते हैं और सबसे दिल में रहम रखने की बात कहते हैं। दुनिया में ऐसी हालत कि लोग अच्छा काम करें, पैदा करने के लिए पहले रहम, करुणा, मुहब्बत की बातें समझानी होंगी और ऐसी हालत पैदा करनी होगी, जिससे यह काम करना लोगों के लिए लाजमी हो जाय। सर्वोदय में जाती तौर पर दिल में पैठना आता है, पर जाती तौर पर दुःख दूर करना नहीं आता। हम एक ऐसी हवा पैदा करना चाहते हैं कि लोग अपने आप अच्छे काम करें।

हम अपने ही लिए न सोचें

आज एक भाई ने हमसे कहा कि "हमें कोई सरमाया नहीं मिला है। हम व्यापार करना चाहते हैं और मदद माँगते हैं तो लोग हमें पागल कहते हैं। इसलिए आप हमें मदद कर दीजिये और सरकार से मदद दिलवा दीजिये।" हमने उनसे कहा कि मैं आपको पागल तो नहीं कहूँगा; लेकिन इतना जरूर कहूँगा कि सब्र रखिये। कुरान में कहा है कि सब्र रखनेवाले को मीठा फल मिलता है। हम जाती तौर पर किसीके लिए सरकार से मदद नहीं माँगते। आपसे भी यही कहना चाहते हैं कि आप अपने दुःख से दुःखी होंगे तो आपको कभी सुख नहीं मिलेगा। हम अपने लिए कभी न सोचें। उससे कोई राह नहीं निकलेगी। हम अपने दुःख को नजरन्दाज करें और गाँव की ही सोचें। गाँव की तरक्की कैसे हो, यह सोचें। गाँव की तरक्की के साथ हमारी भी तरक्की होगी। अपना अकेले का दुःख लेकर बैठेंगे तो हम कभी सुखी नहीं होंगे।

हमें यह समझना चाहिए कि परमात्मा की ख्वाहिश यह है कि हम गाँव के दुःख मिटाने के काम में लगें। इसलिए हमें अपने दुःख से छुटकारा पाने की ही नहीं सोचनी चाहिए। हम सबके सुख में अपना सुख मानें, सबके दुःख में अपना दुःख मानें। भगवान ने हमें दुःख दिया है तो यह पहचानने के लिए कि दूसरे दुःखो की हालत क्या होती है? भूख इसलिए दी है कि हम जानें कि भूखे लोगों की हालत क्या है? उस दुःख का, भूख का तजुरबा कराकर अल्लाह ने हमें नसीहत दी है। हम अपने दुःख को इस तरह दूर नहीं कर सकते, परन्तु अपने दुःख को भूलकर सबके दुःख में हिस्सा लेना चाहिए। यह है इस जमाने का खयाल! इसे हम समाज में लाना चाहते हैं। हम कहते हैं कि एक-एक के दुःख को कहाँ तक रोया करोगे? मान लीजिये, गाँव में कॉलरा हुआ। कोई मर गया। इसमें दुःख करते हुए बैठने की बजाय कुल गाँव की हवा कैसे बदली जा सकती है, रोग की जड़ कैसे कट सकती है, यह सोचकर कोशिश करनी चाहिए। जैसे हिन्दुस्तान में लेप्रॉसी (कुष्ठरोग) हुई, उसमें सिर्फ एक-एक की खिदमत करने से कोई लाभ नहीं होगा! कुल हिन्दुस्तान में से उस रोग की जड़ कैसे काटें, यह सोचना चाहिए! तभी वह रोग देश से हटेगा।

हम जड़ काट रहे हैं

इन दिनों बीमारियाँ भी बढ़ रही हैं और डॉक्टरों की संख्या भी बढ़ रही है। जैसे कुनबे में जुज होते हैं वैसे डॉक्टर भी कुनबे का एक जुज बन गया है। 'फैमिली-डॉक्टर' होते हैं। वे सालभर के लिए कुनबे की देखरेख करते हैं। डॉक्टर दवा एक बोतल में देता है। हरा, लाल, पीला, नीला, तरह-तरह के रंगों का पानी उस बोतल में भर देता है। वह बोतल एक बार घर में बैठ गयी तो वह तब तक घर से बाहर नहीं निकलती, जब तक मनुष्य की लाश बाहर नहीं आती। इस तरह रोग दूर करने का इन्तजाम तो हो गया। मगर अब रोग की जड़ काटने का इलाज होना चाहिए। गाँव में सफाई का ज्ञान लोगों को देना चाहिए। गन्दगी साफ करनी चाहिए। इसीसे आयी बीमारी दूर हो सकती है। क्या खाना चाहिए, कैसे खाना चाहिए, यह ज्ञान लोगों को देना चाहिए। हमारी टोली में भी एक डॉक्टर है। उसका यही काम है कि वह रसोईघर में जाकर देखे कि पकाने में कहीं गलती तो नहीं हो रही है! कौन सी चीज खाने से नुकसान होता है? चावल सफेद नहीं होना चाहिए। इस तरह का ज्ञान टोली का डॉक्टर नहीं देगा तो वह बेकार साबित

www.vinoba.in

होगा। डॉक्टर को तो यह समझना चाहिए कि कैसे खाना, पीना, कब और कितना सोना, कपड़ा कैसे पहनना, रात में जागना नहीं, कब उठना। इन दिनों सिनेमा के कारण देश की सेहत बिगड़ रही है। डॉक्टर को कहना चाहिए कि तुम रात में ९ बजे सोओगे तो हिन्दुस्तान की आधी बीमारी दूर हो जायगी। यह जड़ काटने की बात है। हम जड़ काटने का तरीका न अपनायेंगे तो दुःख दूर नहीं होंगे। यही बात हर चीज में लागू होती है। हमारा काम यही है। हम जड़ काट रहे हैं।

कुछ मसलों का हल अनफरदा, कुछ का बैनुल अकवामी हालात देखकर तो कुछ मसलों का हल कौमी हालत देखकर होता है। एक-एक का दुःख हल करने बैठेंगे तो नहीं होगा। पुराने जमाने का दुःख हल करने का तरीका एक-एक का दुःख दूर करने का था।

आज अमेरिका की हालत क्या है? वहाँ जाकर आये हुए लोग यहाँ लंबे व्याख्यान देते हैं। लेकिन हम कहते हैं कि वहाँकी हालत अलग है। वहाँ हर मनुष्य के पीछे १२ एकड़ जमीन है। हिन्दुस्तान में मुश्किल से पौन एकड़ जमीन है। बारह हिंदुस्तान मिलकर जो हालत होगी, वह आज अमेरिका की है। वहाँ विज्ञान का ज्ञान बहुत ज्यादा है। वहाँकी जमीन में ताकत ज्यादा है। इसलिए उसके साथ हिंदुस्तान की तुलना नहीं हो सकती। पुराने जमाने में लोगों की संख्या कम थी और जमीन ज्यादा। इसलिए उस समय सवाल हल करने का तरीका अलग था। एक-एक के सवाल हल होते थे। आज का रूहानी तरीका समाज के सवाल हाथ में लेकर हल करने का है।

एक शख्स ने हमसे कहा कि '१०, २० साल मैंने मजदूरी की और थोड़ा-थोड़ा करके ५ एकड़ जमीन खरीदी है।' मैंने उससे पूछा कि 'अब तो तुम्हारी तसल्ली हो गयी है?' वह कहने लगा कि अब वह मेरे बेटे की होगी। उसका मसला हल हो गया। अब उसके बेटे का मसला खड़ा हो गया। इस तरह नये-नये मसले खड़े होते हैं। अभी तक तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का मसला था, अब तिब्बत का नया मसला तैयार हो गया है। इसलिए वसी नजर से देखना चाहिए, सोचना चाहिए और सारी दुनिया के काम आयें, ऐसी राह ढूँढ़नी चाहिए। हम समझते हैं कि हमने जो तरीका निकाला है—हवा पानी जैसी जमीन भी सबकी है, उससे हिन्दुस्तान को और दुनिया को राह मिलेगी।

कुल का सोचो, जुज़ का नहीं

नागपुर कांग्रेस में जो प्रस्ताव पास हुआ है, वह बिलकुल छोटा सा प्रस्ताव है। उससे जमीन की मिल्कियत मिटनेवाली नहीं है। कायम रहनेवाली है। उससे किसीका भी समाधान नहीं होगा। इतना ही होगा कि आज जो चल रहा है, उससे एक कदम आगे जायँगे। यूँ सोचकर ही वह किया है। लेकिन इस काम में जितना वक्त जायगा, उतने और ज्यादा नये-नये मसले पैदा होंगे। इसलिए हमारा खयाल है कि जमीन का मालिक परमात्मा है, हम नहीं, यह कहने की हिम्मत होनी चाहिए। लोगों के सामने यह कबूल करना चाहिए कि जमीन का मालिक परमात्मा है। हम मालिक हैं, यह कहना परमात्मा के खिलाफ जाना है। हम यही समझाते हैं। आखिर हम क्या करते हैं? कुरान में कहा है 'अलैकल बलगुल मुबीन' तुमपर बलग याने पैगाम पहुँचाने का जिम्मा है। बस! मैं तो पैगाम पहुँचाने-वाला हूँ। आखिर होता वही है, जो खुदा चाहता है। मैं तो यह सही बात समझकर पहुँचाना चाहता हूँ। इससे ज्यादा बोझ मैं मानूँगा तो वह कुफ्र होगा। जो सही बात है, वह कहनी चाहिए, यह मैंने तय किया है। दुनिया तो चलती ही रहेगी, लेकिन मैं कितने दिन रहनेवाला हूँ? इसलिए उतने थोड़े समय में मैं सही बात, सच बात न बताऊँ तो मैं अपना फर्ज अदा नहीं करूँगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि मिल्कियत पाप है और इस जमाने में एक-एक इन्सान का मसला हल नहीं होगा, कुल समाज का होगा। इसलिए कुल का सोचना चाहिए, जुज़ का नहीं। जहाँ कुल का कुल बिगड़ा है, वहाँ जुज को लेकर क्या करोगे? अंदर से बात बिगड़ी है, इसलिए जुज बिगड़ा है। एक-एक जुज़ की दवादारू करने से सेहत अच्छी नहीं हो सकती। पुराने जमाने में जुज, अवयव बिगड़े थे, कुल नहीं। इसलिए अवयव को अच्छा करने का काम चलता था। आज कुल बिगड़ा है। इसलिए एक जुज़ को, अवयव को लेना नासमझी की बात होगी।

अपने-अपने दुःख लेकर लोग आते हैं तो उसके लिए हमारे पास इलाज, हल नहीं है। लोग सरकार की बात करते हैं। लेकिन हम चाहते हैं कि अवाम अपने मसले खुद हल करे और इस सरकार से नजात पाये। इसलिए हम कहते हैं कि गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज होना चाहिए। हर गाँव में ग्राम-स्वराज होगा तो सारी दुनिया को नजात मिलेगी।

यह सजा?

आज सारी दुनिया तंग है। अखबार का पहला पन्ना खोलें तो खून, खराबी, इधर, उधर दौड़-धूप—यही पढ़ते हैं। यह बेकारों की जमात, यह लश्कर, पुलिस, अदालत, जेल—सारे बेकार खड़े हैं। बेकारों को, चोरों को सजा देने का काम ये बेकार लोग करते हैं। चोरी की तो तीन साल की सजा देते हैं। जेल में चोर को कोई तकलीफ नहीं होती। काम मिलता है। तीन दफा खाना मिलता है। १२ घंटे नींद मिलती है। उसका वजन घटा तो न घटे, यह फिक्र की जायगी और बाहर उसके बाल-बच्चों को तकलीफ होगी। उसकी औरत क्या करेगी? आखिर जिस रास्ते से उसका पति जाता है, उसी रास्ते से जाने की तालीम वह अपने बेटे को देती है। यह बहुत बुरी हालत है। हम तो कहते हैं कि चोरी करनेवाले शख्स को जमीन देनी चाहिए। उसपर वह मेहनत करेगा। तीन एकड़ की सजा उसे दी जायगी तो समाज ठीक रहेगा।

इस तरह से समाज के मसले का हल सोचना है। तो जड़ काटनी चाहिए और कुल दुनिया की निगाह से सोचना चाहिए।

हम दोनों सिपाही हैं

हमारी सभा में बहुत से सिपाही दीख रहे हैं। वे सिपाही हैं। मैं भी अपने देश का एक सिपाही हूँ। हम दोनों एक ही जमात के हैं, क्योंकि हम भी गैरजानिबदार सेवक हैं और वे भी। वे सेवक हैं तो सारे देश के सेवक हैं, किसी एक पार्टी के नहीं। गैरजानिबदार हैं। वे देश की हिफाजत के लिए बैठे हैं। उनके हाथों में काम है। पर उनको अच्छी किताबें पढ़नी चाहिए। उनको मजबूत दिल और जिस्म लेकर बाहर पड़ना चाहिए। इससे वे बेकार नहीं बनेंगे। उनकी ऐसी रूहानी ताकत बढ़ेगी कि वे फौज से अलग होने पर समाज की सेवा में लगेंगे। उनका किसीपर बोझ भी नहीं पड़ेगा। इस तरह रूहानी ताकत बढ़ेगी। ० ० ०

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन अखनूर (जम्मू-कश्मीर) १३-६-'५९

भूदान के निमित्त से हम लोगों के दिल जोड़ना चाहते हैं !

आज यहाँ बहुत अच्छी चर्चाएँ चलीं। कुछ लोग मिलने आये थे। एक सभा नेशनल कॉन्फ्रेन्स की हुई, दूसरी डेमोक्रेटिक नेशनल कॉन्फ्रेन्स की हुई, तीसरी प्रजापरिषद् की हुई। कुछ भाई ऐसे भी आये थे, जो किसी भी पक्ष के नहीं थे। इस तरह आज तरह-तरह के लोगों के साथ चर्चाएँ हुईं। उन लोगों के ध्यान में यह बात आ गयी है कि हम जो बात कहते हैं, वह अगर चली तो कश्मीर और भारत का नक्शा ही बदल जायगा।

गाँव कैसे बचेंगे ?

सरकार चाहे कोई भी हो, वह गाँव में दखल नहीं देगी, तभी दुनिया बचेगी। नहीं तो इन दिनों कुल दुनिया को आग लगाना चंद, मुट्ठीभर लोगों के हाथ में है। क्रुश्चेव, आइक, मॅकमिलन जैसे दो-चार लोग हैं, जिनके हाथ में कुल दुनिया है। इतनी ताकत डेमोक्रेसी के नाम पर उनके हाथ में आ गयी है।

५ साल के लिए डेमोक्रेसी में राज्य करनेवालों के हाथ में सत्ता सौंपी जाती है। विज्ञान के जमाने के ५ साल याने पुराने जमाने के ५० साल होते थे। पुराने सुल्तानों से भी ज्यादा ताकत आज के शासकों के हाथ में है। पाँच साल में अरबों रुपये का खर्च करके कोई ऐसी योजना बनायी जाय जो निश्चित अवधि में खत्म न हो तो अगले पाँच साल के लिए शासन करनेवाली दूसरी पार्टी को भी उस योजना को आगे चलाना ही पड़ता है। पुरानी गाड़ी टूटी, नयी आयी तो भी पटरी वही रहती है। कांग्रेस का इंजिन हटाया, पी. एस. पी. का इंजिन लगाया तो भी पटरी कायम ही रहती है। रफ्तार चाहे बदले या न बदले, लेकिन कहाँ जाना, यह तय है-पटरी तय है। यहाँ डैम बाँधना शुरू किया तो दूसरी पार्टी आने पर उसे वह काम पूरा करना ही होगा। दूसरे देश के साथ कोई करार किया हो, उस करार पर हस्ताक्षर किया हो और उधर से माल आना बाकी हो तो वह माल लेना है होगा। पटरी बन चुकी। इसलिए जनता तभी महफूज होगी, जब वह उठेगी और अपना कारोबार खुद देखेगी। सरकार का दखल गाँव में नहीं होगा। गाँव को बचाने की यही तरकीब है।

जैसे पुराने जमाने के राजा के हाथ में प्रजा का नसीब था वैसे ही आज जिसे चुना है, उसके हाथ में प्रजा का नसीब है। इसलिए ऐसे भरोसे में मत रहो कि पाँच साल में राज बदल जायगा, दूसरा आयेगा। आज के ५ साल याने पुराने जमाने के ५० साल हैं। इसलिए डेमोक्रेसी के लिए खतरा है।

यह समझने की बात है कि गाँव अपने पाँव पर खड़े होंगे और गाँव की एक जमात बनेगी तो अच्छी सरकार होगी तो दखल न देकर मदद देगी। अगर सरकार अच्छी न रही तो मान लो कि मदद न दे तो दखल भी नहीं दे सकेगी।

गायों की रक्षा

एक भाई कहते थे कि गायों का क्या होगा ? आज जमीन परती है, उसपर हल चलाना चाहिए। यह काम रोटेशन से होना चाहिए। कभी यह जमीन परती रखनी चाहिए, कभी वह। कभी इसमें घास उगाना चाहिए और कभी उसमें। कभी इसमें फसल उगानी चाहिए और कभी उसमें। हम ऐसा करेंगे तभी गायों की रक्षा होगी।

जहाँ सर्वोदय जमे, वह जम्मू

आज गाँव में जमात नहीं है। व्यक्ति, जाति, धर्म, घर-सबके सब अलग-अलग हैं। मिलकियत भी अलग-अलग और रहते हैं एक गाँव में। जैसे जानवर एक ही जंगल में रहते हैं और उनका एक-दूसरे के साथ ताल्लुक नहीं होता, वैसे ही गाँव में लोग रहते हैं। ऐसा होगा तो उस गाँव में सरकारी दखल भी होगा। अब सरकार को गाँव में दखल नहीं देने देना है और इससे जनता को बचाना है तो गाँव-गाँव में जमात बननी चाहिए। इस वास्ते जमीन का दान, जमीन की मिलकियत मिटना आवश्यक है।

मैंने उन पार्टीवाले भाइयों से कहा, आपका यह काम है कि जितने मालिक हैं, उतने दानपत्र दें। फिर अमन के साथ इन्किलाब आयेगा। वैसी फिजा यहाँ है। ऐसा काम होगा तो जैसा कभी दुनिया में नहीं हुआ, वैसा यहाँ हो सकता है। जम्मू में सब जमा हुआ मामला है, जहाँ सर्वोदय जमेगा, वह जम्मू !

ये बहनें काम करने के लिए तैयार हैं। लेकिन इनके मार्ग में पाश है। वह पाश यमराज ही तोड़ सकता है। भाइयों ने पार्टियों का काम किया। इन पार्टियों के झगड़े की वजह से लोग तंग हैं। इसलिए मैंने कहा, स्त्रियाँ बचा सकती हैं। वे बचानेवाली शक्ति हैं। मातृस्थान में हैं। उनके बेटे अलग-अलग पार्टियों में बँटे हैं। उनको कहना चाहिए कि हम तो सबको बचानेवाली हैं। इसलिए हम पक्ष में नहीं बँटेंगी और जैसा कि गांधीजी चाहते थे, वैसा हम लोक-सेवक-संघ बनायेंगी, पाश तोड़कर काम में लगेंगी। एक पाश हो तो टूटेगा। लेकिन नागराज के दो-दो, तीन-तीन पाश हों तो नहीं टूटेंगे। जम्मूवासियों को यह समझना होगा और पाशों से छुटकारा पायें। उसके लिए ग्राम-ग्राम में ग्रामराज्य होना चाहिए। ग्राम-पंचायत होगी तो पंचाइत होगी। पहले ग्रामदान होना चाहिए। उसकी बुनियाद पर ग्राम-स्वराज्य का मकान खड़ा होना चाहिए।

यह है हमारी बात। 'भूदान' का यह हमारा नाटक है, स्वांग है। वह इसलिए है कि हम दिल-से-दिल जोड़ना चाहते हैं। गाँव-गाँव में एकता लाना चाहते हैं। उसके लिए भूदान का एक निमित्त हमें मिला है।

● ● ●

अनुक्रम

१. सर्वोदय में राजनीति और प्रेम को इकट्ठा करने की योजना है
मीरासाहिबाँ ८ जून '५९ पृष्ठ ७६७
२. सर्वोदय की मूलभूत दृष्टि
पूँछ २९ जून ५९ ,, ७६८
३. भूदान के निमित्त से हम लोगों के दिल जोड़ना चाहते हैं
अखनूर १३ जून '५९ ,, ७७०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in